18 / 01 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मधुबन भूमि परिवर्तन भूमि

वरदानी भूमि अनुभव करना

➢➢ मैं ब्रह्मामुख वंशावली ब्राह्मण आत्मा हूं

➳ _ ➳ मैं पदमापदम भाग्यशाली आत्मा हूं

→ इतना श्रेष्ठ भाग्य सारे कल्प में किसी का नही है

- स्वयं भगवान ने मुझ आत्मा को घर बैठे ही चुन लिया और अपना बना लिया

→ अपने गुणों, खजानों और शक्तियों का अधिकारी बना दिया वाह मेरा भाग्य वाह

→ अपने श्रेष्ठ भाग्य का और श्रेष्ठ भाग्य देने वाले भाग्य विधाता को याद करते चलते फिरते श्रेष्ठ भाग्य के गीत गाती दिव्य बुद्धि रुपी लिफ्ट से पहुंच जाती हूं मधुबन

➳ _ ➳ मधुबन भूमि वरदानी भूमि

→ मधुबन भूमि जो परमात्म अवतरण भूमि है

→ इस भूमि पर स्वयं परमात्मा के चरण पडे हैं

→ याद मे मग्न मै फरिश्ता आबू की भूमि पर यहां चारो ओर है रुहानी खुशबू ही खुशबू

→ चारों और फरिश्ते ही फ़रिश्ते नजर आ रहे है

→ ऐसी तपोभूमि है जहां पहुंचते ही मन बुद्धि बस एक की ही लगन मे मग्न व रुहानी खुमारी व रुहानी नशा

- बस मैं और मेरा बाबा
- और मौलाई मस्ती

→ बाबा रूम मे बैठते ही मुझ आत्मा में ऐसी अद्भुत चुम्बकीय खींच व पूरे शरीर मे करंट अनुभव कर रही हूं

→ बाबा अपनी वरदानी दृष्टि से त्रिकालदर्शी बना रहे हैं और वरदानों की वर्षा कर रहे हैं

→ इस वरदानी भूमि पर आते ही जो भी कमी कमजोरी या जो भी कड़े संस्कार है वो सब बाबा को देकर हल्का महसूस कर रही हूं

- जैसे यज्ञ मैं आहुति डालते है तो वो जलकर स्वाहा हो जाती है ऐसे ही मैं आत्मा इस अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ मे अपनी कमी कमजोरी सदा के लिए स्वाहा कर रही हूं

→ इस वरदानी भूमि पर मुझ आत्मा को योग लगाने की मेहनत नही करनी पडती स्वत: ही योग लगा रहता है व मैं आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रही हूं

- क्योंकि ये वरदानी तपस्या भूमि ब्रह्मा बाबा मम्मा दादियों और दीदियों की तपस्या भूमि है पवित्र भूमि है

■ इस तपस्या भूमि पर कोई अपवित्र आत्मा आ ही नही सकती

➳ _ ➳ अपनी चेकिंग करती हूं कि मैं आत्मा सम्पूर्ण समर्पण हूं

→ इस वरदानी भूमि पर आकर भी मैं मेरेपन में या पुरानी दुनिया के आकर्षण मे तो नही फंसी हूं

→ मैं आत्मा परमात्म प्रेम से भरपूर होकर आनन्द के झूले मे झूलती खुशी के और श्रेष्ठ भाग्य के गीत गा रही हूं

→ मैं आत्मा बस बाबा की ही हूं मेरा तो इक शिव बाबा दूंगा ना कोई

➳ _ ➳ मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूं हिम्मतवान हूं

→ होगा या नही होगा ऐसे कमजोर संकल्प न लाकर श्रेष्ठ और समर्थ संकल्प ही रखती हूं

■ स्वयं भगवान मेरा साथी है

➳ _ ➳ मैं आत्मा मास्टर नालेजफुल हूं

→ स्वयं बापदादा ज्ञान रत्नों से मुझ आत्मा का श्रृंगार कर रहे है

→ ज्ञान का मनन चिंतन करते मुझ आत्मा की लाइट बढती जा रही है

→ मैं आत्मा लाइट माइट हूं

■ जैसे भोजन को खाने व हजम करने से शक्ति बढती है ऐसे ही आत्मा में ज्ञान रुपी घृत डाल और उसका मनन करने से मैं आत्मा शक्तिशाली बनती जा रही हूं

→ मैं आत्मा करावनहार हूं व कर्मेन्द्रियां करनहार कर्मचारी है और आर्डर प्रमाण चल रही है

→ मैं आत्मा मास्टर नाॅलेजफुल होकर ज्ञान को प्रेक्टिकल मे धारण कर धारणा स्वरुप बनती जा रही हूं

→ मैं आत्मा रोज संकल्प रुपी बीज को दृढता का पानी देकर अपनी कमजोरी को समाप्त कर सफलता अनुभव कर रही हूं

→ मैं आत्मा सफलतामूर्त हूं